B.A. Hindi Hons
B.A. Part II
आलेखक डॉ० अरविन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
एस०एस० कॉ०, जहानाबाद

(1)

Ques :- वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्गीय भक्ति का निरूपण करते हुए उसमें सूर का स्थान निर्धारित करें।

Ans :- श्री वल्लभाचार्य ने जिस मत का प्रचार किया वह पुष्टि सम्प्रदाय कहलाता है। प्रारंभ से ही वल्लभाचार्य की प्रवृत्ति आध्यात्मिक चिन्तन की ओर थी। उनके समय में अनेक सम्प्रदाय प्रचलित थे। शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त का विरोध करने के लिए वैष्णव धर्म चार सम्प्रदायों में बंट गया था। इन सम्प्रदायों में भक्ति को महत्व दिया गया और मुक्त जीव को ब्रह्म न मानकर वैकुंठवासी भगवान की सेवा करने वाला बताया। वल्लभाचार्य ने भी अन्य वैष्णवाचार्य की भाँति शंकर के मायावाद का खंडन किया, क्योंकि उसमें भक्ति के लिए कोई तत्वतः स्थान नहीं था और उस समय भक्ति-भावना की बड़ी आवश्यकता थी। सिद्धान्त रूप से वल्लभाचार्य जी ने जिस मत का प्रचार किया उसे शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद या अविकृत परिणामवाद कह सकते हैं। साधना की दृष्टि से वह पुष्टि मार्ग कहलाता है। सिद्धान्त पक्ष के लिए वल्लभाचार्य विष्णु स्वामी के ऋणी कहे जा सकते हैं, परन्तु साधना पक्ष उनका अपना है। उसकी व्यवस्था उनकी अपनी है।

अपने सम्प्रदाय के नामकरण की प्रेरणा श्रीमद्भागवत से आपने प्राप्त की। श्रीमद् भागवत के द्वितीय स्कन्ध के 10वें अध्याय के चतुर्थ श्लोक में 'पोषणं तदनुग्रहः' कहा है जिसका अर्थ है- भगवान के अनुग्रह को ही पोषण या पुष्टि कहा गया है। भगवान के अनुग्रह से ही भक्त के हृदय में भक्ति का उदय होता है, इसलिए भक्त को अपना सब कुछ भगवान को समर्पण करना पड़ता है, जिससे भगवान के प्रति अनन्यता हो सके, वही पुष्टि मार्ग कहलाता है। पुष्टि मार्गीय भक्ति के विवेचन में हम केवल वल्लभाचार्य जी के ग्रंथों का आश्रय लेंगे। वल्लभाचार्य के तीस ग्रंथ उपलब्ध हैं जिनमें अणुभाष्य सुबोधिनी तत्वदीप निबन्ध तथा षोडश ग्रन्थ ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। पुष्टि प्रवाह मर्यादा भेद में आचार्य जी ने जीव, देह और क्रिया भेद से तथा फल-परंपरा से मार्गों का निर्माण किया है- पुष्टि मार्ग, प्रवाह मार्ग और मर्यादा मार्ग।

क्रमशः —

"पुष्टि प्रवाह मर्यादा विशेषेण पृथक् पृथक्।
जीव देह क्रिया भेद, प्रवाहेण फलेन च॥"

हरिराय जी ने 'हरिराय वांङ्मुक्तावली (भाग-१) में पुष्टि मार्ग के लक्षण इस प्रकार दिये हैं:-

"सर्व साधन राहित्यं फलाप्तौ यत्र साधनम्।
फलं वा साधनं यत्र पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥" (१)

"अनुग्रहे जैव सिद्धि लौकिकी यत्र वैदिकी।
न यत्नादन्यथा विघ्न पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥" (२)

"सम्बन्ध साधनं यत्र फल सम्बन्ध एव च।
सोऽपि कृष्णेच्छया जातः पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥" (३)

"समस्त विषय त्यागः सर्व भावेन यत्र हि।
समर्पणं च देहादेः पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥" (४)

अर्थात जिस मार्ग में लौकिक तथा अलौकिक सकाम अथवा निष्काम सब साधन का अभाव ही श्रीकृष्ण की स्वरूप प्राप्ति में साधन है, अथवा जहाँ जो फल है, वही साधन है, उसे ही पुष्टि मार्ग कहते हैं और जिस मार्ग में सर्व सिद्धियों का हेतु भगवान का अनुग्रह ही है, जहाँ देह के अनेक सम्बन्ध ही साधन रूप बनकर भगवान की इच्छा के बल पर फलस्वरूप सम्बन्ध बनते हैं, जिस मार्ग में भगवान विरह अवस्था में भगवान की लीला के अनुरूप भाव से संयोगावस्था का सुख अनुभूति होता है और जिस मार्ग में सर्व-भावों में लौकिक विषय का त्याग है और उन भावों को सहित देहादि का समर्पण है, वह पुष्टिमार्ग कहलाता है। इस प्रकार हरिराय जी ने बड़े विस्तार से पुष्टिमार्ग का विवेचन किया है। इस मार्ग में जीवात्मा की योग्यता का विचार नहीं किया जाता, केवल भाव का विचार किया जाता है, जैसे हरिराय जी ने लिखा है:-

"केवलेन हि भावेन गोपकन्याः हरिं गताः।"

इन्हीं सिद्धान्तों का विवेचन वल्लभाचार्य के षोडश ग्रंथ में हुआ है। वल्लभाचार्य जी ने मनुष्य के लिए पुष्टिमार्ग का निर्देश इन शब्दों में किया है:-

"ज्ञान भावे पुष्टिमार्गे तिष्ठेत्पूज्यो हरि स्थितः।"

"सिद्धान्त मुक्तावली" में वल्लभाचार्य ने मर्यादामार्गी और पुष्टिमार्गी दो प्रकार के भक्त बतलाए हैं। मर्यादावादी भक्त

क्रमशः: —